BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# ग्रामीण विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की उपयोगिता

**सरनीश कुमार**
शोध छात्र, डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
**डॉ माधुरी वर्मा**
प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी

**शोध संक्षेप**

*गांव भारतीय समाज का आईना है।गांव से अभिप्राय किसी विशेष स्थानीय क्षेत्र से न होकर बल्कि जीवन की एक विधि से है। जिस स्थान पर लोग दृढ़ सामुदायिक भावना से बंधे रहकर परंपरागत तरीके से व्यवहार करते हैं उसी स्थान को गांव कहा जाता है। भारत गांवों का देश है। वर्तमान समय में गांव विकास की ओर अग्रसर है और ग्रामीण लोगों में जागरूकता बढ़ रही हैं। भारतवर्ष के विकासदर को हम मुख्य रूप से उत्पादन क्षमता,विज्ञान, तकनीकी आपूर्ति, क्षमता परिवहन एवं दूरसंचार और मीडिया के संदर्भ में देख सकते हैं। प्रारंभिक काल में ग्रामीण जन पत्र पत्रिकाओं अखबारों के माध्यम से देश दुनिया की सूचनाओं प्राप्त करते थे और सूचना बहुत देर से भी पहुंचती थी। गांव की संचार दुनिया बहुत ही सीमित थी, जिसके अंतर्गत मुख्य रूप से बाजार मेंले और दूर दराज से आने वाले दुकानदार तथा साधु संत संन्यासी सूचना पहुंचाने के माध्यम थे। विकासात्मक संचार ऐसे विकास के लिए कार्य करता है जो सहभागिता एवं विकेंद्रीकरण पर आधारित है। वर्तमान समय में ग्रामीण लोगो, किसानों को संचार के माध्यम से सूचनाओं प्राप्त करने के विभिन्न कार्यक्रम है। जो ग्रामीण लोगों के कार्यों में सुगमता लाने एवं उन्नति में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। वर्तमान समय में आधुनिक भारत में सिर्फ न केवल शहरों बल्कि ग्रामीण भारत में भी सूचना एक बड़ी ताकत के रूप में उभरी है, और सूचनाओं को ग्रामीण लोगों तक पहुंचने में संचार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। संचार माध्यमों को जिस क्षेत्र में भी अपनाया गया है, वह क्षेत्र निरंतर प्रगति कर रहा है फिर चाहे वह स्वास्थ्य का क्षेत्र हो या सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक क्षेत्र संचार के साधनों की उपयोगिता प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ रही है और हम देखते हैं कि वर्तमान समय में ग्रामीण जीवन बदलाव की ओर अग्रसर है।*

**कीवर्ड-** ग्रामीण विकास, सूचना, संचार प्रौद्योगिकी

भारतवर्ष गांव का देश है और यहां की 68.8 प्रतिशत आबादी गांव में निवास करती है साधारणता ग्रामीण विकास को गांव के विकास के रूप में लिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में जीवन की गुणवत्ता के संपूर्ण सुधार से ग्रामीण विकास का तात्पर्य है। संचार के महत्व को मानव जीवन के लिए नकारा नहीं जा सकता मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में रोटी,कपड़ा और मकान के साथ-साथ संचार भी शामिल है। वर्तमान युग को संचार का युग कहा जाता है क्योंकि 21 में शताब्दी का प्रारंभ सूचना प्रौद्योगिकी की अभूतपूर्व क्रांति के साथ हुआ है। माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक और कंप्यूटर तकनीक ने दूरसंचार के साथ मिलकर जिस प्रौद्योगिकी को विकसित किया उसको ही सूचना प्रौद्योगिकी कहां जाता है। सूचना सुविधाओं के कारण ग्रामीण समाज में संचार की भूमिका महत्वपूर्ण है। संचार माध्यमों की ग्रामीण समाज तक पहुंच देश के महत्वपूर्ण सफलताओं में से एक कहीं जाती है। संचार माध्यमों का प्रमुख कार्य भी यही है कि प्रत्येक व्यक्ति की आवाज को उठाया जाए और उनके विभिन्न समस्याओं को प्रमुखता दी जाए।संचार माध्यमों के उपयोग के द्वारा गांव में प्रबंधन और प्रशासन के कार्य कुशलता में प्रभावी वृद्धि संभव है। सामुदायिक रेडियो एवं इंटरनेट ने गांव की कार्य प्रणाली को सुविधाजनक के साथ-साथ सरल बढ़ाने का काम भी किया है संचार माध्यम में गांव के विकास को नए-नए आयाम प्रदान किए हैं संचार माध्यमों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को इंगित कर गांव के विकास में सहायता प्रदान करना है।परिवार एवं जनकल्याण साक्षरता कृषि की उन्नतशील विधियां महिला एवं बाल विकास की स्थितियों का आकलन की जानकारी और गांव को विकास के मुख्य धारा से जोड़ना सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत शामिल है।निर्धनता उन्मूलन में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है मीडिया के द्वारा रेडियो


@2025 Bihar Shodh Samaagam

टेलीविजन समाचार पत्र पत्रिकाएं इंटरनेट तथा अन्य संचार माध्यमों के द्वारा लोगों में शिक्षा सूचना और विकास कार्यक्रमों के माध्यम से जागरूकता आ रही है। वर्तमान समय में हम सूचना संचार प्रौद्योगिकी के दौर से गुजर रहे हैं।और डिजिटल इंडिया की परिकल्पना को प्राप्त करने के लिए तीव्र गति से प्रयासरत हैं। आज सरकार का भी यही उद्देश्य है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को सुदूर अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सके, जिससे भारत विश्व के साथ जुड़ सके और वैश्विक गांव की परिकल्पना साकार हो सके।गांव में संचार सुविधाओं के विकास गांव की तस्वीर बदल रही है। आज मछली पालन, कृषि प्रसार,संसाधन प्रबंध, बागवानी, कृषि ,शिक्षा ,गृह विज्ञान, इंजीनियरिंग का संचार, पशु विज्ञान सभी क्षेत्रों में संचार संसाधनों का उपयोग करके ग्रामीण विकास को नवीन आयाम प्रदान किया जा रहा है। संचार संसाधनों का प्रमुख नियोजन विकास की आवश्यकता के बारे में जन जागरूकता फैलाने में है। संचार साधनों के माध्यम से साक्षरता का प्रसार जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता रोजगार के अवसरों में वृद्धि, कृषि के नवीनतम वीडियो के प्रयोग,बच्चों और महिलाओं के उत्थान एवं समाज के प्रति अधिक सार्थक भूमिका के प्रति चेतना जगाने और ग्रामीण विकास एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।सूचना संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में असाधारण प्रगति ने संपूर्ण विश्व को वैश्विक गांव का रूप दिया वहीं दूसरे और नए-नए आविष्कारों ने ग्रामीणसमाज और शासन को सुविधाओं का नया आधार प्रदान किया।

सूचना ही शक्ति है और संचार लोगों को सूचनाओं से सूचित करने में महत्वपूर्ण योगदान करता है। संचार साधनों के विकास ने प्रत्येक क्षेत्र को प्रगतिशील बनाया है आज प्रत्येक क्षेत्र में इसकी उपयोगिता बढ़ी है।संचार साधनों के ऐसे कार्यक्रम है जो व्यक्ति को सीधे विकास की राहों से जोड़ते हैं जिससे ग्रामीण लोग घर बैठे किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त कर सकते हैं।ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने और किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य दिलवाने की दिशा में सरकार ने हाल में ही कई महत्वपूर्ण योजनाओं कार्यक्रमों और प्रौद्योगिकी आदि का शुभारंभ किया है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है-

**ई कृषि**

ग्रामीण समाज में किसानों को सूचनाओं आवश्यक उपकरणों और सेवाओं के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने का कार्य ई कृषि के माध्यम से किया जा रहा है। जिससे एक और किसानो की आय में वृद्धि हुई है वही उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। इस तकनीक के माध्यम से टेलीफोन कंप्यूटर, लैपटॉप, रेडियो और टीवी के माध्यम से किसानों तक आवश्यक जानकारी अतिशीघ्र पहुंच जाती है। जिससे नए कृषि उपकरणों की सूचना किसानों तक पहुंचने में सहायता मिलती है और मशीनों के उपयोग को बढ़ावा भी दिया जाता है।

**ई प्रशासन**

कृषि के साथ-साथ पंचायत के कामकाज को कारगर एवं सुचारु बनाने के लिए ई प्रशासन को ग्रामीण विकास का सशक्त माध्यम बनाया गया है। इसके द्वारा भूमि रिकॉर्ड का कंप्यूटरीकरण करण,राशन कार्ड, जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र जैसे कार्यों को ई प्रशासन द्वारा किया जा रहा है। ग्रामीण विकास की योजनाओं को भी प्रशासन से जोड़ा गया है।

**ई चौपाल**

ग्रामीण समाज के समस्याओं को हल करने के लिए जून 2000 में ई चौपाल योजना संचालित की गई।इस सेवा का उद्देश्य किसानों को बिचौलियों से मुक्त कराकर कृषि यंत्र,मौसम, फसल और कृषि संबंधित अन्य जानकारी को उपलब्ध कराना है। ई चौपाल के सेवा केंद्रों में किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी दी जाती है। वहीं दूसरी ओर उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास भी किया जाता है।

**ज्ञान दूत**

यह इंटरनेट आधारित पोर्टल है, जिसका उद्देश्य सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीण समाज और वंचितों को पहुंचना है। यह सेवा गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को जरूरत से जुड़ी सुविधाएं भी उपलब्ध कराती है। यह पोर्टल किसानों को कृषि संबंधी जानकारी सी उपलब्ध नहीं कराता अपितु बाजार भाव,

विपणन की जानकारी बाजार की मांग, शिक्षा सूचना एवं संचार आदि मूलभूत जानकारियां उपलब्ध कराने का कार्य कर रहा हैं,जिससे ग्रामीण क्षेत्र की संरचना बदल रही हैं।

**किसान कॉल सेंटर**

केंद्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा इसकी शुरुआत जनवरी 2004 को की गई।इसका मुख्य उद्देश्य खेती से जुड़ी प्रत्येक समस्या का हल किसानों को बताना है। भारत के किसी भी कोने में 1551 नंबर डायल कर किसान अपनी समस्या का हल प्राप्त कर सकते हैं। यह टोल फ्री नंबर होता है, और सभी भाषाओं में उपलब्ध रहता है।

**कल्याणी**

कल्याणी कार्यक्रम मुख्य रूप से महिलाओं के लिए प्रसारित किया जाता है,जिससे स्वास्थ्य शिक्षा में जागरूकता के विषय में विद्वानों के द्वारा जानकारियां दी जाती हैं।

**पूसा कृषि एप**

खेती में प्रौद्योगिकी से लाभान्वित होने के लिए विकसित पूसा कृषि ऐप से किसानों को अपने कृषि क्षेत्र की समस्याओं का आसानी से समाधान खोजने और मौसम के बारे में जानकारी प्रदान करने में मदद करता है। साथ ही साथ वह फसलों को बचाने के लिए उपाय भी बताता है।

**फसल बीमा मोबाइल एप**

फसल बीमा मोबाइल ऐप का प्रयोग ऋण लेने वाले किसानो के मामले में क्षेत्र कवरेज राशि और ऋण राशि के आधार पर अधिसूचित फसलों के लिए बीमा प्रीमियम की गणना के लिए किया जा सकता है। इसका प्रयोग किसी भी अधिसूचित क्षेत्र में फसल के सामान्य बीमा राशि, विस्तारित बीमा राशि, प्रीमियम विवरण और सब्सिडी की जानकारी के लिए भी किया जाता है।

**निष्कर्ष**

संचार और समाज का आपस में गहरा संबंध है। वास्तव में संचार और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। कबूतर से कंप्यूटर तक की मानव सभ्यता की उड़ान संचार के पंखों के द्वारा ही संभव हो पाई है। संचार साधनों की क्रांति देश के ग्रामीण विकास हेतु अपार संभावनाओं के साथ नए युग में प्रवेश कर चुकी है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से ग्राम स्तर पर सूचनाओं की देरी से पहुंचने की समस्या लगभग समाप्त हो चुकी है।सूचना प्रौद्योगिकी की आधुनिक तकनीक के माध्यम से परंपरागत एवं माध्यमिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करके गरीबी बेरोजगारी जैसी समस्याओं को दूर कर ग्रामीण विकास के मंजिल को तय किया जा सकता है। सरकार द्वारा चलाई जा रहे विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही सफल बनाया जा सकता है।सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से ग्रामीण भारत में विकास हो रहा है और उनके उत्पादकता में वृद्धि हुई है स्थानीय समस्याओं का समाधान और व्यावहारिक सुझाव ग्रामीण परिदृश्य बदल रहे हैं।जिससे ग्रामीण समाज में खुलापन, पारदर्शिता, जन भागीदारी और सस्ती कार्यकुशल सेवा प्रदान हो रही है।वर्तमान समय में गांव में निवास करने वाले ग्रामीण जनता के जीवन स्तर में जो भी महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं वह संचार माध्यमों की ही देन है। आज ग्रामीण भारत में शहरीकरण की प्रवृत्तियों के कारण नए-नए बदलाव हो रहे हैं भारत में आए संचार क्रांति ने भारत की तस्वीर को ही परिवर्तित कर दिया है इंटरनेट के माध्यम से ग्रामीण व्यक्ति विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में सूचना एवं संचार क्रांति विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बन गया है और गांव विकास की ओर अग्रसर है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. प्रसाद अवध 1991, गांवों में सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हेतु मीडिया का योगदान महत्वपूर्ण आलेख, रावत पब्लिकेशन,जयपुर.
2. मिश्र ए.के., मीडिया एक क्रांतिकारी परिवर्तन, ग्रामीण अंचल के संदर्भ में मासिक पत्रिका मध्य प्रदेश संदेश मध्य प्रदेश शासन का मासिक प्रकाश अप्रैल 2011.
3. अग्रवाल, जी.सी., कुलश्रेष्ठ एस. पी.(2017-18), शैक्षिक तकनीकी एवं सूचना संप्रेषण तकनीकी अग्रवाल प्रकाशन.
4. सिंह ओ.पी.,संचार माध्यमों का प्रभाव,क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली.
5. मित्तल संजीव (अगस्त 2017), कुरुक्षेत्र, सूचना प्रशासन मंत्रालय नई दिल्ली.
6. कुमार वीरेंद्र (अगस्त 2017), ई-तकनीकी का ग्रामीण विकास में योगदान, कुरुक्षेत्र, सूचना प्रशासन मंत्रालय नई दिल्ली.
7. दाधीच, बालेंदु शर्मा (मई 2018), ग्रामीण विकास में सूचना और संचार तकनीक का योगदान, कुरुक्षेत्र, सूचना प्रशासन मंत्रालय नई दिल्ली.